पाठ- 13 : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

मूल भाव

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला छायावाद के एक श्रेष्ठ कवि थे जिन्होंने आम जनता के दुःख-दर्द को सुंदर तरीके से अभिव्यक्त किया। यहाँ उनकी दो कविताएँ पढ़नी हैं। 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में सड़क पर गिट्टी तोड़ती मजदूरनी का वर्णन है। इसमें एक ओर कठिनतम परिस्थितियों में काम करते श्रमिक का चित्रण है तो दूसरी ओर सुख - सुविधा संपन्न लोगों का। यह एक प्रगतिवादी रचना है जिसमें शोषक – शोषित के रूप में विभाजित समाज की विसंगतियों को प्रकट किया गया है। दूसरी, 'मौन' कविता में जीवन में मौन के महत्व का प्रतिपादन किया गया है और जीवन में सरलता को ज़रूरी स्वीकार किया गया है।

भाव पक्ष की प्रमुख विशेषताएं

- 'वह तोड़ती पत्थर' कविता एक श्रमिक नारी पर लिखी गई है, जो सड़क के किनारे पत्थर तोड़ रही है। कवि ने उसे इलाहाबाद की किसी सड़क पर काम करते देखा है। उसी का चित्र उन्होंने यहाँ खींचा है।
- इलाहाबाद की किसी सड़क पर काम में लगी एक श्रमिक महिला को देखकर निराला जी ने लिखा है कि वह जहाँ बैठी काम में लगी है, वहाँ कोई छायादार पेड़ भी नहीं है, जो उसे गरमी की प्रखरता से, उसकी तेज़ी से बचा सके। पर उसे इस स्थिति से कोई शिकायत नहीं है, वह तो इस स्थिति को स्वीकार कर रही है। सोचिए क्यों ? क्योंकि वह जानती है कि जब कठिन श्रम करना है तो अनुकूल परिस्थितियों की कल्पना ही व्यर्थ है।
- कवि की दृष्टि पहले श्रमिक महिला के शारीरिक रूप-सौंदर्य की ओर जाती है। उसका शरीर साँवला है। वस्तुतः, धूप में काम करने वाले सभी श्रमिकों का रंग धूप में साँवला पड़ ही जाता है। वह युवती है और निरंतर श्रम करने के कारण उसका शरीर सुगठित है यानी देह-रचना सुडौल और सुघड़ है। उसकी झुकी आँखें बड़ी प्यारी लग रही हैं। उसका मन भी काम पर पूर्ण तन्मयता से लगा है। हाथ में भारी हथौड़ा लेकर वह बार-बार पत्थरों पर चोट कर रही है। उन्हें तोड़ रही है।
- इसके बाद कवि परिवेश की विरोधी स्थिति का चित्रण कर रहा है। वह कहता है जहाँ एक ओर वह मज़दूरनी गरमी में छायाहीन वृक्ष के नीचे काम कर रही है - वहीं उसके एकदम सामने के परिवेश से संपन्नता और सुख-सुविधा झलक रही है। वहाँ सुंदर सजावटी वृक्षों की पंक्तियाँ हैं, विशाल ऊँचे भवन हैं और उनके चारों ओर सुंदर दीवारें हैं। अर्थात् वह संभ्रांत नागरिकों की बस्ती है। वे लोग सुख-सुविधाओं के बीच अट्टालिकाओं में परकोटों से घिरे बैठे हैं और आस-पास की परिस्थितियों से बेखबर अपने आप में सिमटे हुए हैं, जबकि उन भवनों का निर्माण करने वालों को मौसम की मार से बचने की सुविधा तक नहीं है।
- इस समय धरती ऐसे तप रही है जैसे रूई अंदर ही अंदर धीरे-धीरे सुलगती जाती है। चारों ओर धूल का गुबार-सा छा गया है। गर्द का एक-एक कण चिंगारी सा जलने लगा है। अब तो दोपहर हो आई है। दोपहर में गरमी अपने चरम पर होती है। ऐसे में भी वह मज़दूरनी सिर नीचा करके पत्थर तोड़ने के कार्य में लगी हुई है।
- कवि उसे देखता है तो उसे लगता है कि सितार को बजाने पर भी जो झंकार मैंने कभी नहीं सुनी थी, ऐसी झंकार मुझे उस मज़दूरनी के श्रम और उसकी स्वाभिमानी दृष्टि से सुनाई पड़ी। पलभर उसका हाथ रुक जाने पर वह सुडौल युवती काँपी, उसके माथे से पसीने की कुछ बूँदें टपक पड़ीं। इसके बाद वह पुनः काम में लग गई। उसके पुनः काम प्रारंभ करने के अंदाज़ से कवि को लगा मानो वह कह रही हो कि वह पत्थर तोड़ती है यहाँ 'मैं तोड़ती पत्थर'

का व्यंग्यार्थ यह भी है कि मैं पत्थर जैसी हृदयहीन सामाजिक व्यवस्था को तोड़ना चाहती हूँ।

- 'मौन'कविता में एक व्यक्ति अपने प्रियतम से कुछ क्षण शांति से मौन रहकर व्यतीत करने का आग्रह कर रहा है। ये दोनों मित्र भी हो सकते हैं और दो प्रेमी भी। महत्त्वपूर्ण यह है कि दोनों समान परिस्थितियों में जीवन यात्रा कर रहे हैं। प्रस्तुत कविता में अपने प्रियपात्र से कहा गया है - 'हे प्रिय, आओ दोनों कुछ देर के लिए बैठ लें। जीवन तो निरंतर गतिशील है। उस गतिशीलता में कुछ पल बैठकर स्वयं को विराम दें। हम दोनों एक ही जीवन मार्ग के पथिक हैं, अतः इस जीवन के क्षणिक और स्थायी कष्टों और अंधकारों को घेरकर कुछ देर बैठ लें।
- कवि चाहता है कि दोनों चुपचाप बैठे रहें। जीवन के गहरे अँधेरे को, असफलताओं को घेर कर बैठें। उन पर चुपचाप मनन करें। हमारा जीवन कैसा हो? सरल और बंधनों से मुक्त हो, अपने वश में हो। वह उत्थान और पतन की चोटों को ऐसी सरलता से सह जाए जैसे प्रातःकाल की वायु से छोटे-छोटे पत्ते कभी ऊपर कभी नीचे होते रहते हैं और झोंकों को चुपचाप सहते रहते हैं अर्थात् हिलते-डोलते दिखाई देते हैं। ऐसे ही हम जीवन के उतार-चढ़ावों को झेलते हुए भी निद्र्वन्द्व यानी तनाव मुक्त बने रहें।

शिल्प सौंदर्य

- कविता को छंद के बंधन से मुक्त करने में निराला का बड़ा योगदान है। 'वह तोड़ती पत्थर' में तुकांतता है। तुक पंक्तियों के अंत में ही नहीं भीतर भी है, पर उसका बंधन नहीं है, पंक्तियाँ छोटी-बड़ी हैं, पर उनमें प्रवाह है, जैसे - श्याम तन, भर बँधा यौवन।
- शब्द प्रयोग में भी कवि ने बड़ी कुशलता का परिचय दिया है। कम शब्दों से अधिक गूढ़ अर्थ का संकेत करना निराला की विशेषता है। जैसे, 'देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं', 'मैं तोड़ती पत्थर', 'मौन मधु हो जाए' आदि ऐसे ही प्रयोग हैं।
- 'मौन' कविता में तत्सम शब्दों की प्रधानता है पर 'वह तोड़ती पत्थर' कविता की भाषा बड़ी ही सरल और बोलचाल की है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

1. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर ग्रीष्म ऋतु की भीषणता का वर्णन कीजिए।
2. 'मौन' कविता का केंद्रीय भाव बताइए।
3. 'मौन' कविता के आधार पर बताइए कि निद्र्वन्द्व जीवन के लिए कवि किस स्थिति की कामना कर रहा है?
4. भाव स्पष्ट कीजिए:

   (क)श्याम तन, भर बँधा यौवन,

   नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,